7

प्रारंभिक स्तर पर नाटकों के माध्यम से भाषा-शिक्षण

मेहराज अली*

प्रस्तावना

बाल साहित्य में बच्चों के लिए अजीबोगरीब रोमांचक तथा प्रेरक घटनाओं का विवरण ही नहीं होता अपितु उनके लिए तो पूरा संसार होता है जिसमें वे रहते हैं, संघर्ष करते हैं, बुराई का अपनी अच्छाई से मुकाबला करते हैं। इसके साथ ही कथा कहानियों में बच्चों की आत्मिक शक्ति को शब्दों में अभिव्यक्ति मिलती है। बच्चा कहानी सुनना ही नहीं चाहता बल्कि सुनाना भी चाहता जैसे कि वह गीत सुनना ही नहीं चाहता बल्कि गाना भी चाहता है, खेल देखना ही नहीं चाहता, खेलना भी चाहता है। उसी भांति वह नाटक देखना ही नहीं चाहता बल्कि उसे नाटकीय रूप से प्रस्तुत करना भी चाहता है।

नाटक वर्तमान काल की एक महत्वपूर्ण विधा है और इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसकी घटनाएँ दर्शकों की आँखों के सामने घटित होती हैं। नाटक में कार्य व्यापार की गतिशीलता आवश्यक समझी जाती है। इसमें पर्दा उठने से लेकर पर्दा गिरने तक गति बनी रहती है।

भाषा-शिक्षण के संदर्भ में भी नाटक एक विशेष रूप से प्रयोग में लाया जा सकता है। इसका मूल कारण है कि बच्चे स्वयं नाटक के संवादों को अपनी शैली में उच्चारित करते हैं जिससे उनमें शब्दों की समझ के साथ-साथ उनके उच्चारण तथा उनके सही अर्थ का भी ज्ञान होता है। इसी संदर्भ में नीचे कुछ ऐसी विशेषताएँ प्रस्तुत हैं जिनके आधार पर कहा जा सकता है कि भाषा शिक्षण हेतु नाटक कितना उपयोगी है।

विचारों का विकास

शब्दों के स्पष्ट ज्ञान से बच्चों में तर्क शक्ति मज़बूत होती है। उनमें सोचने समझने का विकास होता है। नाटक में घटित हो रही घटनाएँ उनके मन में कल्पनाओं के संसार का निर्माण करती हैं। बालक नाटक को सत्य मान कर उसे ही वास्तविक जीवन समझने लगता है और भाषा उसकी कल्पना की इस उड़ान को पंख देती है।

बालकों का चरित्र विकास

विचारों के पश्चात् एक निश्चित मार्ग पर चल सकने की शक्ति को चरित्रबल कहते हैं। बच्चों का मन विचारों का अड्डा होता है। यही इच्छाएँ मन को चंचल कर मन को स्थिर नहीं रहने देतीं। भाषा बच्चों के चरित्र का भी निर्माण करती है। बच्चों को यदि आरंभिक वर्षों में ही, जब वे अनुकरण की स्थिति में होते हैं, उन्हें सही शब्दों एवं उनके उच्चारण से परिचय

* एफ़-4/1654, ट्रांजिट कैम्प, आनंद पर्वत, दिल्ली 110005

कराया जाना चाहिए। इस संदर्भ में नाटक बच्चों में भाषा की पहचान और उनके चरित्रों के निर्माण में सहायक सिद्ध होता है। नाटक में पात्रों के बीच संबंध और संवाद उन्हें यह बोध कराते हैं कि 'तुम' और 'आप' का वर्गीकरण किस प्रकार करना है।

बालक की इच्छाओं की तृप्ति

बालक की इच्छाएँ बड़े गज़ब की होती हैं जिनका ज्ञान प्रौढ़ों को नहीं होता क्योंकि उनकी सोच बालक की सोच से बहुत भिन्न होती है। हम प्रायः अपने हिसाब से बालक को नापते हैं। जो हम अनुचित समझते हैं वह बालक के लिए भी बुरा समझते हैं। हम उन पर नैतिक विचार लादने की कोशिश भी करते हैं। बालक की साधारण इच्छा भी हम बलपूर्वक दबा देते हैं। नाटक उनकी इन्हीं इच्छाओं की पूर्ति में सहायता करता है। नाटक के संवाद और शब्द बच्चों की आत्माभिव्यक्ति को प्रकट करते हैं। नाटकों के माध्यम से बच्चों को अपनी इच्छाओं को प्रस्तुत करने तथा अपनी झिझक व संकोच को त्याग, खुल कर अपनी बात कहने का अवसर मिलता है। बच्चे नाटक की आसान भाषा व आसान मुहावरों के साथ अपनी स्थिति, व्यथा एवं भावों को अपने अभिभावकों व अध्यापकों के समक्ष प्रस्तुत कर पाते हैं।

'वक्त की आवाज़' नाटक में लेखक बच्चों के मुँह से कहलवाते हैं.... "आप तो हमसे बड़े हैं। हम कोई गलती करते हैं तो आप हमें पीटते हैं। अब आप जो गलत कर रहे हैं, उसकी सज़ा आपको हम दे तो नहीं सकते, केवल इतना कह सकते हैं कि कुछ हमसे ही सीखिए।" एक प्रकार से कहा जाए तो नाटक बच्चों की भावनाओं को भाषा की ज़ुबान देता है जिससे वे अपनी इच्छाओं की पूर्ति कर पाते हैं।

अच्छे संस्कारों का जन्म

नाटक बच्चों में केवल समझ ही उत्पन्न नहीं करता बल्कि यह उनमें संस्कारों का भी निर्माण करता है। कुछ धार्मिक नाटकों एवं एकांकियों के माध्यम से बच्चों में भारतीय संस्कृति के प्रति जागरुकता तथा उनके प्रति आदर व सम्मान का भाव भी उत्पन्न होता है। नाटक बच्चों को संस्कारित भाषा प्रदान करता है जिससे उनमें बड़ों के प्रति आदर व सम्मान का भाव जागृत होता है। 'बाल रामायण', 'हिरण्यकश्यप', 'बाल हनुमान' 'बाल कृष्णा', आदि नाटक बच्चों में धार्मिक भाव व सांसारिक गुणों का भी विकास करते हैं।

ज्ञान वृद्धि और विचार विकास

कहा जाता है कि मूर्ख व्यक्ति का सदाचारी होना संभव नहीं, क्योंकि ज्ञान का ही दूसरा रूप सदाचार है। ज्ञान दो प्रकार का होता है – सांसारिक और आध्यात्मिक। दोनों का ज्ञान बालक के चरित्र विकास में सहायक होता है। इस कारण बालक को अपने देश, जाति और समाज का ज्ञान कराना आवश्यक होता है। बाल नाटक बच्चों में देश, जाति और समाज संबंधित ज्ञान को विकसित करने में सहायता प्रदान करते हैं।

आज बच्चों के लिए बाल रंगमंच मुक्त रूप धारण कर चुका है क्योंकि पहले दशकों की तुलना में आज वह अपनी पसंद और इच्छानुसार अभिनय करने, बोलने और गाने-नाचने की पूरी छूट ले चुका है। आज ऐसे भी नाटक लिखे जा रहे हैं जिनमें न वेशभूषा की बंदिश है और न पर्दा उठाने-गिराने का झंझट।

साथ ही लंबे-लंबे संवाद रटने के स्थान पर आज के नाटकों के कथानकों में सामान्य बोलचाल वाली भाषा का प्रयोग किया जाता है जिसे बच्चे अपने रोज़मर्रा के क्रियाकलापों में प्रयोग करते हैं। इसके अतिरिक्त इन नाटकों के कथानक बच्चों के अपने कथानक होते हैं, और शब्दों का चयन बच्चों के आस-पास के परिवेश में बोले-सुने जाने वाले शब्दों में से किया जाता है, ताकि बच्चे नाटक में प्रयोग किए गए शब्दों को अपने निजी परिवेश में भी आसानी से प्रयोग कर पाएँ। उदाहरण के लिए–

1. जैसे सीढ़ी हो महल की
या सीढ़ी ऊँचे मंदिर की
पर्वत ढल तानों की खेती
नीचे से ऊपर तक जाती
हरी भरी पर्वत की खेती

2. छिक! छिक! छिक! छिक!
छुक! छुक! छुक! छुक!
छनन! छनन! छनन! छनन!
झटपट! झटपट! खटपट! खटपट!
झटपट! झटपट! खटपट! खटपट!

3. "हमारे सामने उन कुत्तों ने बम को पटरी पर रखा और यह पटरी से यों चिपक गया जैसे धरती से अंगद का पाँव।"

इस प्रकार नाटकों के माध्यम से बच्चों में भाषागत ज्ञान में वृद्धि होती है। कथा की भाँति नाटक के कथोपकथन पाठक में एक साधारण गुदगुदी के साथ उत्सुकता बढ़ाते हैं। वाक्यों के लचीलेपन से स्वयं पाठक बँध जाता है –

आओ बच्चों, तुम्हें सुनाएँ
बात आज की नहीं, कथा है
बहुत पुरानी, बहुत पुरानी।
****
क्या बकता है कनुए नाई
क्या तेरी है शामत आई?

इस प्रकार इन नाटकों में कथा हो चाहे पात्र या कथोपकथन – इनकी जीवंतता बच्चों पर अधिक समय तक अपना असर छोड़ेगी। इनमें प्रयोग किए गए संवाद बच्चों के मस्तिष्क पर एक अमिट छाप छोड़ते हैं।

भिन्न-भिन्न भाषाओं के शब्दों का ज्ञान

चुटकुले

चुटकुले बच्चे बहुत पसंद करते हैं, क्योंकि वह उन्हें हँसाते हैं, गुदगुदाते हैं। नाटक में प्रवाह लाने तथा नीरसता कम करने हेतु नाटककार चुटकुले एवं मुहावरेदार भाषा व शब्दों का प्रयोग करता है और बच्चे इन्हीं मुहावरों व चुटकुले आदि का संवाद प्रस्तुति के समय प्रयोग करते हैं। चुटकुला शब्द 'चुट' और 'कुला' दो शब्दों के योग से बना है। 'चुट' का अर्थ है चुटकी – बच्चों में एक-दूसरे की चुटकी काटने से नहीं जिससे दर्द होता है बल्कि उस मुहावरे से है जिसे 'चुटकी लेना' कहते हैं। यहाँ चुटकी का अर्थ है मज़ाक बनाना या हँसाना। दूसरा शब्द 'कुला' कुलेल से बना है। कुलेल माने गुदगुदी। इस प्रकार चुटकुला का अर्थ हुआ गुदगुदाने वाली चुटकी। इस कारण रेडियो और दूरदर्शन के बाल कार्यक्रमों में चुटकुलों को अवश्य स्थान दिया जाता है। इनकी बढ़ती हुई लोकप्रियता के कारण इसे पाठ्यपुस्तकों के स्तर पर भी अनुभव किया जाने लगा। *हँसिए हँसाइए, बीरबल*

की खिचड़ी, बीरबल की बातें, शामत आना, अकल की टंकी नौटंकी, बगुला भगत, चुहिया कुमारी जी, काका कौव्वा, चंचल बंदर, कानुआ नाई, तमाशा, ठग ठग गए, हम तो हुए टीचर, धूर्ताचार्य का औषधालय, चूहे के पेट में चूहे कूदे, जंगल में कवि सम्मेलन, हिरण्यकश्यप मर्डर केस, नटखट कृष्ण आदि बाल नाटकों के माध्यम से बच्चों में चुटकुलों की रसानुभूति होती है। इन नाटकों में चुटकुले एवं मुहावरेदार शब्दों का प्रयोग किया गया है जो कि बच्चों के आसपास के वातावरण से जुड़े होते हैं–

शब्दों में चमत्कार वाले चुटकुले
ज़रा खोल लो अक्ल की टंकी।
अब न लगाना कोई फ़ंकी ।
चुन ही रख लो अपनी अंटी।

सामान्य ज्ञान के चुटकुले
हिम्मत और अक्ल से मिल के
बिगड़े काम बन सकते हैं।

चतुराई भरे चुटकुले
मास्टर जी – रमेश, एक और मुर्गा कुतुब मीनार पर बैठा था। उसने एक अंडा गिराया पर ज़मीन पर गिरकर भी अंडा नहीं फूटा, क्यों?
रमेश – जी, मुर्गा अंडा नहीं देता।

इस प्रकार के चुटकुले आदि से बच्चों में भाषिक समझ के साथ-साथ मानसिक बुद्धि का भी विकास होता है।

पहेलियाँ

पहेलियाँ बच्चों में नई सोच और नई संवेदना उजागर करती हैं और उन्हें कल्पना लोक में विचरने में सहायता करती हैं, जैसे – *स्वर्ग से बुलावा, धर्मखाता, सौगात, किंकर्तव्यविमूढ़, धरम-करम, धूर्त, ज़मीन को छूना, दम निकल जाएगा, मरम्मत, साँस भी कंजूसी से लेना, जुएँ भी हाथी पालने के बराबर, नाच-तमाशा, बागडोर, भविष्य को भूत डसना, कुएँ में आग लगाना, ऊटपटाँग, लघुपतनक, कलचितिया, हाथीमल, राधा के नंदलाल, चालू किस्म, चटोरेपन* आदि पहेलियाँ शब्द विशेष पर ही दिखाई देती हैं।

इसके अतिरिक्त कुछ पहेलियाँ वाक्य रूप में अपना एक विशेष अर्थ प्रस्तुत करती हैं –

1. नाक कान पर करे निवास,
   दूर को लावे पास (*चश्मा*)
2. एक कोठरी चालीस चोर,
   आग लगा दे चारों ओर। (*माचिस*)
3. टेढ़ी-मेढ़ी गली, रस से भरी (*जलेबी*)

इस प्रकार पहेलियों में भावों का ऐसा चमत्कार देखने को मिलता है जिसे सुनकर बच्चे एकाएक खिल उठते हैं और तुरंत याद कर लेते हैं।

मैथिली
चार चिरईया चार रंगा चारों बेद रंग।
पिंजरा में रख देला, चारों एक्के रंगा।। (*पान*)

भोजपुरी
हती मुट्ठी गाजीमियाँ, हतवत पोंछि।
इहे जाल गाजीमियाँ, धरि है पोंछि।। (*सुई-धागा*)

अतः इस प्रकार के शब्दों के प्रयोग से बच्चों में अन्य भाषाओं के शब्दों सहित देशज शब्दों की भी समझ विकसित होती है। इन संवादों की भाषा इतनी सहज व सरल होती है कि बच्चे आसानी से याद रख पाते हैं तथा खेल-खेल में गुनगुनाते भी रहते हैं।

अध्यापकों हेतु सुझाव

- प्रारंभिक स्तर पर बच्चों का मस्तिष्क अनुकरण की अपार शक्ति से भरपूर होता है। शिक्षकों को चाहिए कि उनके समक्ष तथा उनके माध्यम से

नाटकों का आयोजन करें और बच्चों को भी उसमें सहभागिता हेतु प्रोत्साहित करें।

- नाटकों को प्रदर्शित करने से पूर्व अथवा कक्षा में नाट्य पाठ के समय बच्चों से उनमें प्रयुक्त शब्दों के बारे में बातचीत करें तथा उनका सही उच्चारण व अर्थ समझाएँ।
- नाटक चाहे प्रदर्शित करना हो अथवा कक्षा में पाठ करवाना हो, अध्यापक को चाहिए कि वे संवादों की लयात्मकता पर ज़ोर दें। लयात्मकता के माध्यम से बच्चे नाटक में प्रयुक्त कठिन शब्दों का भी आसानी से उच्चारण कर पाते हैं तथा लंबे समय के लिए वह शब्द उनके मस्तिष्क में सुरक्षित हो जाता है।
- कक्षा में बच्चों से नाट्य पाठ क्रियात्मक शैली में करवाया जाना चाहिए। बच्चों में नाटक के पात्रों को बाँट कर उन्हें पात्र के व्यक्तित्व के अनुसार संवाद पढ़ने पर बल दिया जाना चाहिए। इसके साथ-साथ अन्य बच्चों में भी इन पात्रों का बँटवारा करते रहना चाहिए। इसके माध्यम से बच्चों में नाटक के प्रति उत्सुकता और आकर्षण पैदा होता है। बच्चे नाटक को एक खेल मानने लगते हैं और उनका मन कक्षा में लगा रहता है।
- नाट्य प्रदर्शन अथवा नाट्य पाठ के पश्चात् अध्यापक को चाहिए कि वे बच्चों से नाटक संबंधित प्रतिक्रिया लें। अमुक नाटक से उन्हें क्या सीख मिली? नाटक में किस प्रकार की भाषा का इस्तेमाल किया गया? किन शब्दों को बोलने में उन्हें कठिनाई महसूस हुई? नाटक में प्रयुक्त मुहावरेदार संवाद व शब्दों के वास्तविक अर्थ क्या हैं अथवा नाटक में किस अर्थ का बोध कराते हैं? व्याकरणिक स्तर पर नाटक में संज्ञा, सर्वनाम आदि क्या-क्या हैं?.... आदि।
- नाट्यकला बच्चों में सहयोग तथा टीम वर्क की भावना को जागृत करती है। अतः विद्यालय में समय-समय पर बाल नाट्य महोत्सव का आयोजन किया जाना चाहिए जिसमें बच्चों को उनकी क्षमता एवं रुचि के अनुसार सहभागिता दी जानी चाहिए।

नाटक मूल रूप से व्यक्ति को खुद से जोड़े रखता है और इसी संदर्भ में यह बच्चों के लिए एक महत्वपूर्ण विधा के रूप में पहचाना जाता है। नाटकों का मुख्य ध्येय बच्चों में आचरण सिद्धांतों को लाना, मानव स्वभाव और मानव चरित्र का अध्ययन कराना, भावों को व्यक्त कराना, संपर्क दृष्टि से उच्चारण करना, भाषागत शब्दों की पहचान करना आदि है। नाटकों के माध्यम से बच्चों में भाषागत ज्ञान और शब्दकोश में बढ़ोतरी होती है। अतः कक्षा एवं विद्यालयों में नाटकों का मंचन विद्यार्थियों के लिए एक महत्वपूर्ण क्रियाकलाप के रूप में प्रयोग किया जाना चाहिए।

ग्रंथ सूची

प्रगल्भ, राधेश्याम. 1979(क). *खोखला सिक्का*. शकुन प्रकाशन, नयी दिल्ली.

——— 1979(ख). *शनिलोक*. शकुन प्रकाशन, नयी दिल्ली.

शुक्ल, लालजीराम. 1952. *बाल मनोविकास*. नंदकिशोर एंड ब्रदर्स प्रकाशन, वाराणसी.

साहनी, संतोष. 1990. *बाल संसार समग्र*. प्रचारक ग्रंथावली, वाराणसी.